B. A. Part - III
Philosophy Paper-05

Dr. Ragini Kumari
Associate Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Attributes and Personality of God (Part - I)

ईश्वर के व्यक्तित्वपूर्ण तथा स्रष्टा होने के गुण ईश्वर के सभी गुणों में प्रमुख माने जाते हैं। ईश्वर के व्यक्तित्वपूर्ण होने का मतलब यह होता है कि ईश्वर में विवेक, इच्छाशक्ति भावना आदि चीजें हैं और जहाँ तक ईश्वर को स्रष्टा होने का सवाल है ईश्वरवादी उसे कबूल करता है कि इस संसार की सृष्टि ईश्वर ने की है। अब हम उन दोनों प्रकार के गुणों पर अलग-अलग प्रकाश डालेंगे।

(1) Personality of God (ईश्वर का व्यक्तित्वपूर्ण होना) ईश्वर के व्यक्तित्वपूर्ण होने का गुण पूजा की धारणा से विकसित होता है। पूजा का विषय ईश्वर है और वह ईश्वर पूजा का विषय तभी हो सकता है जबकि वह व्यक्तित्वपूर्ण हो। मानी वह अपनी इच्छा और विवेक शक्ति के आधार पर पुजारी को सान्त्वना दे सके। ईश्वर अवश्य असीम है तथा महान व्यक्तित्व होगा और यदि ईश्वर व्यक्ति है उसका व्यक्तित्व है, तब वह ईश्वर का विचार उसकी भावना तथा उसकी इच्छा सभी असीमित होते हैं लेकिन ईश्वर के उपर्युक्त गुण में कुछ तार्किक असुविधाएँ उत्पन्न होती है जिन पर

विचार करना आवश्यक है, चूंकि ईश्वर मनुष्य से उच्च है और ईश्वर को मनुष्य के समान नहीं समझा जा सकता है इसलिए उसका विचार वैसा नहीं है जैसा मनुष्यों का विचार होता है। अर्थात् जिस विचार की चर्चा एक व्यक्तित्वपूर्ण ईश्वर के सम्बन्ध में की जाती है वह विचार conceptual या discursive नहीं होता।

ईश्वर का विचार वेदान्त दर्शन, स्पिनोजा तथा ब्रैडले ने माना है। स्पिनोजा के अनुसार सत्य ज्ञान ही उच्च ज्ञान है, क्योंकि Spinoza के अनुसार द्रव्य की पद्धति से ही सभी वस्तुएँ निकलती है। उसी प्रकार Bradley यह कबूल करता है कि उच्च अनुभूति एक ऐसी अनुभूति है जिसमें सभी विभिन्नताएँ समाप्त हो जाती है और एक सामंजस्यता की स्थापना होती है इस अर्थ में ईश्वर को सर्वस्व माना जाता है। जहाँ तक ईश्वर का सवाल है उसके सम्बन्ध में भूत, भविष्य का सवाल पैदा नहीं होता है। अतः ईश्वर के जिस विचार की चर्चा यहाँ में की जाती है, वह विचार, वह ज्ञान मनुष्य के विचार की तरह सीमित है।

ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण होने के कारण उसकी इच्छा भी पूर्ण है। (God is perfect will) अर्थात् ईश्वर कोई काम करता है तो कोई पूर्ण आदर्श या उद्देश्य से करता है क्योंकि ईश्वर पूर्ण है इसलिए वह असीमित रूप से अच्छा है। परिणामस्वरूप वह ऐसा काम नहीं करता जिससे अच्छाई की अधिक मात्रा में प्राप्ति हो, क्योंकि ईश्वर की अच्छाई में मात्रा नहीं होती। ईश्वर पूर्ण है और उसकी पूर्णता में कमी-बेशी

नहीं होती है। ईश्वर सर्वशक्तिमान है फिर भी वह अपनी इच्छाओं से ऐसे काम नहीं कर सकता है जो तार्किक रूप से असंगत है अर्थात् वह कभी भी 2+2=4 नहीं कर सकता।

ईश्वर में भावनाएँ भी हैं।

एक ईश्वरवादी यह विश्वास करता है कि यदि ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण है तो उसमें भावनाएँ भी होंगी। अब चूँकि ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण है, ईश्वर सृष्टि का प्रभाव उसपर पड़ता है, अब चूँकि ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण है इसलिए सृष्टि का प्रभाव उसपर पड़ता है। अब यदि संसार में अशुभ है तो अशुभ का प्रभाव भी ईश्वर पर पड़ता है, परिणामस्वरूप ईश्वर को अपरिवर्तनशील नहीं कह सकते और यदि हम ऐसा मान लें कि ईश्वर पर सृष्टि का प्रभाव नहीं पड़ता है तब हम ईश्वर को व्यक्तित्वपूर्ण नहीं मान सकते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ईश्वर को व्यक्तित्वपूर्ण होने का गुण खासतौर से ईश्वर की पूजा की धारणा से निकलता है, ईश्वर को व्यक्तित्वपूर्ण होने का मतलब है कि उसके विचार, इच्छा, भावना आदि हों। लेकिन ये विचार भावना तथा इच्छा उस तरह के नहीं हैं, जिस तरह की मानव की आशाएँ, विचार एवं भावनाएँ होती है, बल्कि ईश्वर के ये गुण असीमित रूप से उसमें विद्यमान है।

— TO be continued —